KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/ JAN-MAR (2018)/VOL-5/ISS-1/A10 PAGE NO.32-36
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
UGC APPROVED JOURNAL NO. 47663
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र और नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिक वैशम्य का तुलनात्मक अध्ययन

[1]डॉ॰ देवी कृष्णा

[1]सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सारांश

समाज में परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन आते रहते हैं। जब ये सामाजिक परिवर्तन सामाजिक मूल्यों को तोड़ने लगते हैं, उस समय वहाँ सामाजिक समस्या का जन्म होता है। स्वतन्त्रता के पश्चात समाज का रूप भी बदला। व्यक्ति की आवश्यकताओं के साथ–साथ मानव–मूल्य, जीवन संघर्ष भी बदले। फलस्वरूप मानव ने स्वयं को नवीन सामाजिक समस्याओं से घिरा पाया और अनचाहे और अनजाने संकट के बादल उस पर मंडराने लगे। मनुष्य के स्वयं का अस्तित्त्व खतरे में पड़ गया, जीवन और परिवेश के बीच जो कुछ घटित हुआ उसके लिए वही जीवन बन गया। उन्हीं के आधार पर मूल्यों की खोज की जाने लगी एवं जीवन की आन्तरिक एवं बाह्य आवश्यकताओं के आधार पर कुछ कसौटियाँ बनाई गई। आज पुराने मूल्यों का ढांचा डगमगा रहा है, वहीं नये मूल्य स्थापित हो रहे हैं। जीवन की वास्तविकता का सही रूप साहित्य में ही देखने को मिलता है। इसमें जीवन को गहराई से जानने और समझने का अवसर मिलता है। उपन्यास जीवन के वास्तविक रूप को हमारे समक्ष रखता है और दिशा प्रदान करता है।

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org